विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : 5 ■ दिसंबर २०२४

कुछ इस तरह चुकाया 2 छात्रों ने अपना गुरुऋण

जिला परिषद प्राथमिक शाला, तडवले के दो छात्र सालों बाद अपनी ही स्कूल में शिक्षक बनकर आए और उन्होंने स्कूल का भाग्य बदल दिया

तडवले (धाराशिव) : 160 वर्ष पुरानी तडवले जिला परिषद प्राथमिक शाला स्कॉलरशिप और नवोदय परीक्षा में एक मिसाल कायम कर चुकी है। स्कॉलरशिप परीक्षा के लिए इनके पढ़ाने का तरीका 'तड़वले पैटर्न' नाम से प्रसिद्ध है।

पहले किसी साधारण स्कूल की तरह इस स्कूल के छात्र भी प्रतियोगी परीक्षाएँ मुश्किल से पास कर पाते थे। लेकिन 2017 में कुछ विशेष घटा। श्री बालासाहेब जमाले, जो इस स्कूल के पूर्व छात्र हैं, स्कूल में शिक्षक के रूप में नियुक्त हुए। बालासाहेब का 1988 बैच से नवोदय के लिए चयन हुआ था। उन्होंने तय किया कि वे अपने स्कूल के छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं में टॉप स्कोरर बनाएंगे।

संयोग से, 2018 में इसी स्कूल के एक और पूर्व छात्र, श्री रामकृष्ण ढवले, भी उसी स्कूल में नियुक्त हुए। दोनों ने मिलकर स्कॉलरशिप और नवोदय के उम्मीदवारों के लिए अतिरिक्त कक्षाएं शुरू कीं। उन्हें प्रधानाध्यापक और शेष स्टाफ का पूरा सहयोग भी मिला। करोना महामारी के दौरान भी उनके प्रयास नहीं रुके। उन्होंने यूट्यूब के माध्यम से पढ़ाई जारी रखी। उनकी मेहनत रंग लाई। पिछले 6 वर्षों में, इस स्कूल के 73 छात्रों ने स्कॉलरशिप परीक्षा पास की और 28 छात्र नवोदय स्कूल के लिए चयनित हुए।

जमाले जी और ढवले जी को उनकी उपलब्धियों के लिए राष्ट्रीय आदर्श शिक्षक पुरस्कार, नवाचारी शिक्षक पुरस्कार और अन्य कई पुरस्कार मिले। उनके समर्पित प्रयासों ने उनके स्कूल को भी कई पुरस्कार दिलाए।

तड़वले के स्कूल में अब शिक्षकों की एक मजबूत टीम बन चुकी है, जो स्कॉलरशिप, नवोदय, सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा और अन्य विद्यालय स्तरीय प्रतियोगी परीक्षाओं में इतना शानदार काम कर रही है कि अब उन्हें राज्यभर के अन्य स्कूलों द्वारा मेंटरिंग के लिए आमंत्रित किया जाता है।

ऐसा सतत कार्य, ऐसी निस्वार्थ सेवा विनोबा टीम को ऊर्जा से भर देती है। ■

365 चलनेवाला सरकारी स्कूल!

प्रतियोगी परीक्षाओं में छात्रों की सफलता सुनिश्चित करने के लिए स्कूल ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। छात्रों की पढ़ाई और तैयारी के लिए सालभर, बिना रुके, यह स्कूल खुला रहता है।

अग्निपथ के राही

अशिक्षा के नशे में धुत इन गांववालों को उन्होंने जगाया, सही राह दिखाई। कोई आश्चर्य नहीं कि डिगेश्वर साहु यहां के लोकप्रिय मास्टरजी हैं।

पेज 4

छात्रों ने लिया प्रशासनिक कार्य का जायजा

बाल दिवस के उपलक्ष्य में जिला कलेक्टर श्रीमती नम्रता गांधी द्वारा परिकल्पित 'शैडो ऑफिसर' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

पेज 8

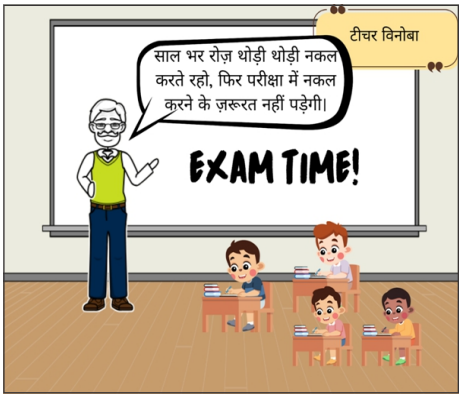

'सही सहयोग से स्कूलों में गतिमान विकास संभव'

"हमारी वैदिक संस्कृति में शिक्षा को केवल पढ़ाना नहीं, बल्कि निरंतर सीखने के रूप में देखा गया है। एक आदर्श शैक्षिक वातावरण वही है जहाँ मैं सीख रहा हूँ, शिक्षक सीख रहे हैं, छात्र सीख रहे हैं... इस प्रक्रिया में प्रगति के साथ मूल्यों का निर्माण भी होता है।"

-- श्री समीर कुर्तकोटी (सीईओ, जिला परिषद, भंडारा)

भंडारा (महाराष्ट्र) : भंडारा जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री समीर कुर्तकोटी भी मानते थे कि जिला परिषद की स्कूलों में गुणवत्ता की कमी है। फिर उन्होंने देखा कि स्कूलों में संसाधनों की कुछ सीमाएँ ज़रूर हैं, परंतु उनमें गुणवत्ता की कमी नहीं है।

उन्होंने टीम विनोबा के साथ अपने विचार साझा करते हुए कहा, " आज के शैक्षिक परिदृश्य में गुणवत्ता अत्यंत महत्वपूर्ण है। ZP स्कूलों में जहां भी प्रगति दिखती है, उसके पीछे निःशंक जमीनी स्तर पर कार्यरत शिक्षकों का ही योगदान है। हालांकि, उन्हें प्रशासन से मिलने वाला सहयोग भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सही सहयोग के साथ उनका प्रभाव बढ़ सकता है।"

"किताबें पढ़ना सोचने की क्षमता को बढ़ावा देती है। इसलिए हमने जिले के सभी स्कूलों में शिक्षकों के लिए 'एक तास वाचन' (एक घंटा पठन) इस उपक्रम की शुरुवात की। पढ़ने से ही संवेदनशीलता, मानवता और परोपकार जैसे मूल्य विकसित होते हैं।"

उनमें सहयोग और बौद्धिक जुड़ाव को बढ़ावा देने के लिए, उन्होंने स्वयं ओपन लिंक्स फाउंडेशन (OLF) के विनोबा ऐप को जिले में लागू किया और शिक्षकों को किताबों पर समीक्षा लिखकर ऐप पर अपलोड करने के लिए प्रेरित किया। वे बताते हैं कि इस साल में 170 से ज्यादा शिक्षकों ने शोध लेख प्रस्तुत किए हैं।

समीरजी के सुझाव के अनुसार भंडारा जिले में विनोबा पोस्ट ऑफ द मंथ जीतनेवाले शिक्षकों को पुरस्कार स्वरूप में पिछले 9 महीनों से किताबें ही दी जाती हैं। वे इस बात का भी ध्यान रखते हैं कि शिक्षकों को OLF के 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार और अन्य सम्मान जिले की जनरल मीटिंग में सभी अधिकारियों की उपस्थिति में दिए जाएं। वे कहते हैं, "इससे शिक्षक प्रोत्साहित होते हैं और अधिकारियों को भी शिक्षकों के प्रयासों के बारे में जानकारी मिलती है।"

OLF के संस्थापक श्री संजय डालमिया विनोबा ऐप को अधिक प्रभावी बनाने के लिए श्री कुर्तकोटी के मूल्यवान सुझावों का स्वागत करते हैं।

"हम समीर जी जैसे वरिष्ठ IAS अधिकारियों के आभारी हैं, जिनकी दूरदृष्टि से विनोबा कार्यक्रम स्कूलों और कार्यालयों में प्रभावी रूप से लागू किया जा सका।" ■

"मैं विनोबा ऐप को शिक्षकों के साथ संवाद का एक व्यापक मंच बनाना चाहता हूँ, जो निरंतर, अनौपचारिक शिक्षा का भी एक माध्यम हो। वेबिनार, ऑनलाइन कार्यशालाओं और विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों पर लघु पाठ्यक्रमों के लिए मैं इसका उपयोग करना चाहता हूँ, ताकि यह शिक्षा संबंधी कार्यों के लिए एक केंद्र बन जाए।"

'उत्कृष्ट जांजगीर-चांपा अभियान' में कलेक्टर की अभिनव पहल

जांजगीर-चांपा: जांजगीर कलेक्टर श्री आकाश छिंकारा जी के द्वारा जिला में शिक्षा के स्तर में सुधार लाने हेतु इस माह सभी विकासखंड में क्रमशः बैठक कर 164 प्राचार्यों के साथ सीधा संवाद किया गया। चर्चा के दौरान प्राचार्यों को निम्न निर्देश दिए:

- जो बच्चे साप्ताहिक परीक्षा में अच्छे अंक ला रहे हैं उन्हें प्रातःकाल प्रार्थना के दौरान प्रोत्साहित करें।
- बच्चे कहाँ पर गलती कर रहें हैं उसे पहचाने और उस पर काम करें।
- जो विद्यार्थी परीक्षा में 50% से कम पा रहे हैं, उनके लिए अलग से उपचारात्मक शिक्षा (Remedial Classes) की व्यवस्था करें.
- जिला PLC - Professional Learning community द्वारा तैयार किये गए महत्वपूर्ण प्रश्न संग्रह का लगातार अभ्यास कराएँ।
- गणित, विज्ञान और अंग्रेजी विषय पर अतिरिक्त कक्षा लगायें जिससे अपेक्षित परिणाम लाया जा सके|
- प्राचार्य प्रति दिवस - कम से कम 1 घंटे कक्षा 10 वीं एवं 12 वीं में - पीछे बैठकर अध्यापन कार्य का अवलोकन करें।
- लगातार अनुपस्थित बच्चों के अभिभावकों से मिलकर उन्हें विद्यालय में लगातार लाने का प्रयास करें।

शिक्षा में अच्छे कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए और "उत्कृष्ट जांजगीर-चांपा अभियान" को सफल बनाने के लिए, प्रत्येक प्राचार्य को एक विजन पत्र भी दिया गया| इस बैठक में कलेक्टर के साथ अतिरिक्त कलेक्टर श्री दुर्गा प्रसाद अधिकारी, शिक्षा विभाग के सभी अधिकारी एवं विनोबा की टीम उपस्थित रही। ■

नागपुर : 13 नवंबर को नागपुर स्थित जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (DIET) कार्यालय में विनोबा ऐप की प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 100 शिक्षक और मुख्याध्यापक शामिल हुए। विनोबा टीम के प्रोजेक्ट ऑफिसर निलेश नागपुरे और अतुल भगत ने इस कार्यशाला में प्रशिक्षण प्रदान किया।

नागपुर : नागपुर जिला शिक्षा अधिकारी श्री सिद्धेश्वर कालूसे ने 14 नवंबर को आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में 5 शिक्षकों 'पोस्ट ऑफ द मंथ' पुरस्कार से सम्मानित किया। इस अवसर पर 'महावाचन' उपक्रम के लिए 3 शिक्षकों को और स्पोकन इंग्लिश चैलेंज 1 और 2 के लिए 9-9 शिक्षकों को सम्मानित किया गया।

नासिक : जिले में आयोजित पवित्र पोर्टल शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 75 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डीआईईटी) के 2 प्रतिनिधि, ब्लॉक संसाधन केंद्र (बीआरसी) के 2 सदस्य, संकुल प्रमुख, शिक्षक और विनोबा टीम के सीनियर प्रोजेक्ट ऑफिसर कृष्णा घायाल उपस्थित थे।

गरियाबंद : 18 नवंबर को गरियाबंद में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में जिला मिशन समन्वयक श्री के. एस. नायक और सहायक कार्यक्रम समन्वयक (एपीसी) पेडागॉजी श्री विल्सन थॉमस ने जिले के 10 शिक्षकों को पोस्ट ऑफ द मंथ पुरस्कार से सम्मानित किया। ओएलएफ के प्रोजेक्ट ऑफिसर शुभम पटेल भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

भंडारा : 24 नवंबर को जिले में मोहाडी ब्लॉक के हरडोली केंद्र में विनोबा ऐप की प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 14 शिक्षक शामिल हुए। इनमें 10 मुख्याध्यापक और १ क्लस्टर हेड थे। विनोबा टीम के प्रोजेक्ट ऑफिसर निखिल गजभिये ने इस कार्यशाला में प्रशिक्षण प्रदान किया।

धमतरी : 15 नवंबर को धमतरी में आयोजित विशेष जिला स्तरीय कार्यक्रम में जिले के 8 शिक्षकों को पोस्ट ऑफ द मंथ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में जिला शिक्षा अधिकारी श्री टी. आर. जगदल्ले, बीईओ श्री काली राम साहू, एपीसी श्री नंद किशोर साहू, बीआरसी के श्री रामुलाल साहू, और मंडल संयोजक श्रीमती स्वेता साहू विशेष रूप से उपस्थित रहे। विनोबा टीम की ओर से प्रोजेक्ट ऑफिसर हितेश निर्मलकर उपस्थित थे।

दुर्ग : जिला कलेक्टर ऋचा चौधरी ने 3 क्लस्टर शैक्षणिक समन्वयकों (CACs) और 20 शिक्षकों को 'बोलेगा बचपन', 'उत्कृष्ट' पहल और 'पोस्ट ऑफ द मन्थ' के तहत सम्मानित किया। इस अवसर पर संयुक्त कलेक्टर श्री एम. भार्गव, भिलाई नगर निगम आयुक्त श्री विजय देवारे, अरविंद मिश्रा (जिला शिक्षा अधिकारी), सुरेंद्र पांडे (डिष्टी मिशन डायरेक्टर), विवेक शर्मा (एपीसी), और विनोबा टीम की ओर से प्रोजेक्ट ऑफिसर प्राची तुमसरे उपस्थित थे।

अग्निपथ के राही

अशिक्षा के नशे में धुत इन गांववालों को उन्होंने जगाया, सही राह दिखाई। कोई आश्चर्य नहीं कि डिगेश्वर साहु यहां के लोकप्रिय मास्टरजी हैं।

खेडितिकरा (गरियाबंद) : डिगेश्वर कुमार साहु जब 2007 में खेडितिकरा प्राथमिक शाला में शिक्षक बनकर आए, तब विद्यार्थियों की उपस्थिति 50 प्रतिशत से भी कम होती थी। कारण अनेक थे। सब से बड़ा कारण यह था कि गांववालों में शिक्षा के प्रति कोई प्रेम नहीं था; बच्चों को उन्होंने स्कूल भेजने के बजाय खेती के कामों में लगा रखा था।

दूसरा, गांववाले जो महुआ का नशा करते, वही बच्चे भी करते और जंगलों में, खेतों में पड़े रहते। इधर स्कूल भी दुर्लक्षित था, जैसे अपर्याप्त शिक्षक संख्या, बुनियादी संसाधनों की कमी, इत्यादि। डिगेश्वर जी ने पहल की। गांव के हर घर, हर आंगन जा जा कर लोगों को जागरूक करने का काम शुरू किया। सप्ताह के सातों दिन, 24 घंटा, अपने आपको शैक्षिक गुणवत्ता हेतु पूरी तरह समर्पित कर दिया। नशामुक्ति अभियान चलाएँ। जिला प्रशासन की मदद से मुलभूत सुविधाएं ठीक करवाईं। बाकी शिक्षक भी फिर धीरे धीरे हाथ बंटाने लगे।

16 साल में अभूतपूर्व परिवर्तन आया है। स्कूल के बच्चे खेल, योग, पढ़ाई, सब में आगे हैं तथा एकलव्य, जवाहर, विवेकानंद जैसी शालाओं में चयनित हो रहे हैं।

उनके प्रेरणादायक कार्य के लिए डिगेश्वर जी को कई सम्मान प्राप्त हुए। राज्यस्तरीय शिक्षक सम्मान के लिए भी वे मनोनीत हुए हैं। पर आज भी डिगेश्वर जी उतना ही काम करते हैं। हमें गर्व है कि ऐसे आदर्श शिक्षक विनोबा ऐप से प्रेम रखते हैं, उस पर सक्रिय हैं।

शिक्षा का पोषण

सरडीह (जशपुर) : सरडीह के प्राथमिक शाला में पर्यावरण के प्रति अनूठा प्रेम देखने को मिलता है। एकल शिक्षक श्री अनुज साहू ने विद्यार्थियों के साथ मिलकर विद्यालय के आंगन में गुलाब, मोगरा, गोंदा, बीछी फूल और स्थानीय प्रजाति के पुष्प लगाए हैं। साथ ही एक शानदार 'पोषण वाटिका' का निर्माण किया है। मध्यान्ह भोजन में बच्चे शुद्ध और पौष्टिक सब्जियां ग्रहण करते हैं। इस पोषण वाटिका में किसी प्रकार की रासायनिक खाद और रासायनिक दवाई का इस्तेमाल नहीं किया जाता। वे कहते हैं, "इस पोषण वाटिका में उगती लौकी, कुम्हड़ा, बरबटी, चुरचुटिया और डोडका जैसी पौष्टिक सब्जियां विद्यार्थी में शारीरिक और बौद्धिक क्षमता का विकास हो रहा है।"

विद्यालय परिवार के 28 विद्यार्थी इस पोषण वाटिका का भरपूर फायदा उठा रहे हैं।

अनुजजी मानते हैं कि इसी शुद्ध और पौष्टिक भोजन की वजह से उनके अध्यापन के प्रयासों के भी अच्छे परिणाम आए हैं। जवाहर नवोदय विद्यालय में पूरे जिले से कक्षा पांचवी में अध्यनरत दो विद्यार्थीयों का चयन हुआ है।

अकेला शिक्षक होने के बावजूद हार मानने की बजाय विद्यार्थीयों को पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी प्रशिक्षित कर रहे अनुजजी के इस अथक कार्य को विनोबा टीम का सादर नमन।

सिलेबस नहीं, भविष्य का निर्माण!

पिंपलगांव मालवी (अहमदनगर) : "मैंने सुना था की डॉ. कलाम ने एक गांव का नाम वैतागवाड़ी (मुसीबत की जगह) से बदलकर आशावाड़ी (आशा की जगह) रखा। यह विचार ही कितना प्रेरणादायी है।"

ये हैं श्री सतीश राठौड़, यहाँ के जिला परिषद की पाठशाला के शिक्षक, जो शिक्षा के माध्यम से समाज जीवन बदलने के मिशन पर हैं। वे कहते हैं, "हम यहाँ सिर्फ विषय नहीं पढ़ा रहे हैं; हम भविष्य का निर्माण कर रहे हैं।"

जर्जर सरकारी स्कूल और सीमित संख्या में छात्र देखकर निराश होने की बजाय सतीशजी ने अपने ही परिवार के सदस्यों की मदद से स्कूल की इमारत की मरम्मत की। स्थानीय आदिवासी समुदाय की ठाकरी बोली सीखकर उनका विश्वास जीत लिया।

सतीश जी के मार्गदर्शन में स्कूल खिल उठा। पुस्तकालय, कंप्यूटर लैब्स स्थापित हुए। उन्होंने पर्यावरण जागरूकता, सफाई, नशामुक्ति, इत्यादि अनेक उपक्रम भी चलाएं। यह परिवर्तन धन और संसाधन आकर्षित करने लगा। मिड-डे मील, पुस्तकालय, डिजिटल लैब जैसी सुविधाएँ बनीं। निजी स्कूलों के बच्चे भी यहा आने लगे।

एक संघर्षशील ग्रामीण स्कूल से एक पुरस्कार विजेता संस्था तक की यह यात्रा, सभी शिक्षकों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। विनोबा टीम का मानना है कि सरकारी स्कूलों के ऐसे सैकड़ों शिक्षक गुणवत्ता प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। उन्हें आवश्यकता है तो बस अभिभावकों के विश्वास की।

अनुशासन और संगठन का नमूना - पारडी कुपी शाला

पारडी कुपी (गडचिरोली) : गडचिरोली जिले के पारडी कुपी जिल्हा परिषद स्कूल में, शिक्षकों ने अपने विद्यार्थियों को किसी भी हाल में पिछड़े न रहने देने की ठान ली है। जब जिला परिषद से मिलनेवाला 40,000 रुपये का वार्षिक अनुदान घटकर 15,000 रुपये हो गया, तो शिक्षकों ने हर महीने अपने वेतन का 10 प्रतिशत हिस्सा देना शुरू किया, और स्कूल के काम को आगे बढ़ाया।

प्रधान अध्यापिका श्रीमती प्रतिभा चौधरी बताती हैं कि उनकी टीम ने बड़े प्रयासों से कक्षाओं को प्रोजेक्टर, LED टीवी और प्रयोगशाला के लिए टेस्ट ट्यूब और मैग्नेट जैसी चीज़ों से सुसज्जित किया। उनका समर्पण देखकर गाँववालों ने भी स्कूल के लिए 85,000 रुपये जुटाये। साथ ही, छात्रों को खेती का व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए एक कार्यक्रम बनाया गया, जहाँ बच्चे फलों और सब्जियों की खेती करते हैं, और गाँव के बाजार में सब मिलकर बेचते हैं।

शिक्षिका गीता मानकर ने बताया कि स्कूल में सुझाव और शिकायत पेटी स्थापित की गई है, जिसके द्वारा एक छात्र ने अपने पिता की शराब की लत को दूर करने में मदद मांगी। शिक्षकों के मार्गदर्शन में, वह छात्र अपने पिता को समझाने में सफल रहा।

इन शिक्षकों का कार्य अभी जारी है क्यूंकि अभी बहुत काम बाकी हैं। वे बच्चों के लिए डायनिंग शेड और खेलकूद की सुविधाएँ बनाना चाहते हैं ताकि बच्चे भविष्य में खेलों में हिस्सा लेकर देश का नाम रौशन कर सकें। गडचिरोली जिला प्रशासन इस आदर्श स्कूल की सराहना करते हुए अन्य स्कूलों को यहाँ आकर इससे सीखने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।

विनोबा टीम धन्य है इस छोटेसे गाँव में ऐसे स्कूल को देखकर, जहाँ शिक्षक मिलकर समर्पण और नवाचार की मिसाल कायम कर रहे हैं।

शिक्षा और दूरदृष्टि

- 'समाज गौरव' डॉ. प्रशांत महाजन

डॉ. प्रशांत हाथ से लिखने में कठिनाई वाले छात्रों पर शोध कर रहे हैं, जिससे उनकी शिक्षा शैली और जरूरतों को समझा जा सके। उनकी कहानी शिक्षा के एक ऐसे नायक की है, जो समाज में सकारात्मक बदलाव लाने के प्रति दृढ़ संकल्पित है।

बोरगांव (नागपूर): डॉ. प्रशांत महाजन, जो नागपूर जिले के कलमेश्वर तहसील में जिला परिषद उच्च प्राथमिक विद्यालय, बोरगांव, में शिक्षक हैं, केवल अपने शैक्षणिक कार्यों के लिए नहीं, बल्कि एक बेहतर समाज का निर्माण करने के उनके समर्पण के लिए जाने जाते हैं। उनकी शिक्षा सिलेबस की सीमाओं से परे जाकर, जीवन के कई पहलुओं में बदलाव ला रही है। वे अपने कार्यों की योजना इस तरह करते हैं, जिससे विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमियों से आने वाले छात्र शिक्षित और सशक्त बने।

प्रशांत जी के सबसे उल्लेखनीय कार्यों में से एक है, गरीब छात्रों के लिए एक पुस्तकालय की स्थापना – जहां पर अब एक हजार से अधिक पुस्तकें हैं — ताकि छात्र अपनी सीमाओं से परे जाकर दुनिया का अन्वेषण कर सकें। इस पुस्तकालय के नियमित उपयोग से अब तक आठ छात्रों को सरकारी नौकरियाँ भी मिल चुकी हैं।

डॉ. प्रशांत कई मानवीय कार्यों के लिए समर्पित रूप से कार्य करते हैं। "छात्रों को कोई भी चीज़ सीखाने का सब से सरल तरीका होता है, उन्हें कर के दिखाना। जैसे उन्हें हम गणित की समस्या हल करना सिखाते हैं, वैसे ही सामाजिक समस्याओं का हल ढूँढना सीखा सकते हैं। अगर मैं उन्हें कर के न दिखाऊँ तो मेरी बात वो क्यूँ सुनेंगे?"

और यही विचार लेकर वे नियमित रूप से स्थानीय वृद्धाश्रम में समय बिताते हैं और वृद्धों को समाज से जुड़ा महसूस कराते हैं; हर महीने सौ से अधिक पेड़ लगाकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपना योगदान देते हैं; अंगदान का संकल्प लेकर अपने सेवा भाव को और भी व्यापक बनाया।

उनके योगदान के लिए, उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कार, जैसे साने गुरुजी शिक्षक गौरव पुरस्कार, समाज गौरव पुरस्कार, और महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

निशांत जी कहते हैं कि उनके विद्यार्थी अपने मन का कोरा काग़ज़ लेकर उनकी हर गतिविधि को ध्यान से देख रहे हैं; और उन्हें विश्वास है कि बच्चे भी आज नहीं तो कल किसी न किसी तरीके से समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी निभाएंगे।

जब तक डॉ निशांत महाजन जैसे शिक्षक सरकारी शालाओं में कार्यरत हैं, विनोबा टीम का काम आगे ही बढ़ता रहेगा इसमें कोई दो राय नहीं। ■

जिल्हा परिषदेचा शिक्षक

आई नी बाप दिवसभर उन्हा पावसात राबराव राबत असतात
लेकरू एकटंच तयारी करून कधी चपले सहित तर
कधी अनवाणी निघतं आणि शाळेत पोहोचतं...
डोळ्यात असंख्य स्वप्न आणि वास्तवात असंख्य समस्या असतांनाही...
पण हे समजायला जिल्हा परिषदेचा शिक्षकच व्हावं लागतं...॥धृ॥
भर पावसात कधी छत्री तर कधी इरलं, तर कधी फाटका रेनकोट घेऊन,
रान वाटा, मळ्याचे बांध, नदी नाले तुडवीत लेकरू शाळेत पोहोचतं
चप्पल बूट का नाही घातले? हे तोऱ्यात नाही विचारता येत...
कारण चपला बूट या साऱ्यात टिकणारच नसतात...
पण हे समजायला जिल्हा परिषदेचा शिक्षकच व्हावं लागतं... ॥१॥
घरी आम्हाला जवळ बसवून कोणी आमचा अभ्यास घेत नाही
कारण दिवसभर दमलेली अडाणी आई घरकामात व्यस्त आणि
जरा बरा शिकलेला बाप पिऊन मस्त झालेला असतो.
दुसऱ्या दिवशी आम्हाला अभ्यास का नाही झाला
हे दरडावून विचारताही येत नाही...
कारण... लेकराच्या डोळ्यातले भाव बोलत असतात...
पण हे समजायला जिल्हा परिषदेचा शिक्षकच व्हावं लागतं... ॥२॥
बऱ्याचदा लेकरांचे डबे रिकामेच असतात
पोषण आहार दररोज शाळेत मिळतो म्हणून नाही काही...
लेकरं खिचडीवाल्या ताईची, मावशीची आतुरतेने वाट पाहत असतात...
पण हे समजायला जिल्हा परिषदेचा शिक्षकच व्हावं लागतं... ॥३॥

श्रीमती कावेरी वि. बौराडे,
जिल्हा परिषद
प्राथमिक शाळा, बौरखित
ता-सिन्नर, जि-नाशिक

असंख्य अडचणी, असंख्य प्रश्न, अनेक तक्रारी,
ऑनलाइन, ऑफलाइन सगळीच काम...
सगळं करूनही सूर नाराजीचेच असतात...
तरीही मुलांचं भावविश्व जपत त्यांच्या सर्वांगीण
विकासासाठी आम्ही सतत प्रयत्नशील असतो...
पण हे समजायला जिल्हा परिषदेचा शिक्षकच व्हावं लागतं... ॥४॥
दुपारच्या सुट्टीत खिचडी खातांना पहिला घास तोंडात जायच्या आधी
घरून डब्यात आणलेली चटणी, भाकरी, रानभाजी,
एवढेच काय देवाला गेल्यावर आणलेला प्रसाद सुद्धा...
जे जे असेल ते मॅडम / सर घ्या ना... असं म्हणतानाचे निरागस भाव,
आमच्यावरची माया... आणि आमच्या तोंडात घास
जाताच त्यांच्या चेहऱ्यावरचा अपार आनंद...
हे तरल भाव समजायला जिल्हा परिषदेचा शिक्षकच व्हावं लागतं... ॥५॥
मुलांना सुविधा नाहीत म्हणून लोकसहभागातून
दप्तरे, स्वेटर, वह्या, पाट्या, बूट, इमारती...
जे जे नाही ते ते मिळवण्यासाठी आटापिटा करणारा माझा शिक्षक...
मुलांना काहीही कमी पडू नये म्हणून राबणारे आईबाप
आणि शाळेत काहीही कमी पडू नये म्हणून धडपडणारा शिक्षक...
यात फार काही फरक नाही...
पण हे समजून घ्यायला जिल्हा परिषदेचा शिक्षकच व्हावं लागतं...
निदान माणूस म्हणून तरी याकडे पहावं लागतं ॥६॥

बिटिया का पढ़ना ज़रूरी

शिक्षकों ने गुमसुम रहती छात्रा के माता-पिता को पढ़ाई का महत्व समझाया। उनके निरंतर प्रयासों से वे सायली की पढ़ाई के लिए घर में अनुकूल वातावरण तैयार करने में सफल हुए।

निगड़े खे. बा. (पुणे) : पुणे जिले के भोर तालुका में बसे निगड़े खे. बा. गांव के बच्चों को पढ़ाई में कोई खास दिलचस्पी नहीं थी। सायली (काल्पनिक नाम) नाम की एक लड़की हमेशा एक कोने में बैठी रहती थी। वह सिर्फ उपस्थिति दर्ज कराने के लिए स्कूल आती थी।

शिक्षिका श्रीमती मंदाकिनी चाचर ने अन्य शिक्षकों से चर्चा की और सायली जैसे बच्चों को पढ़ाने के लिए खेल, गीत और कहानियों के माध्यमों का उपयोग किया। सायली को चित्र बनाने और कहानियां सुनने का शौक था, तो शिक्षकों ने गणित का हर उदाहरण उसे चित्रों के माध्यम से समझाना शुरू किया, जिसे सायली ध्यान से सुनने लगी। सभी शिक्षकों ने सायली पर विशेष ध्यान दिया।

सायली स्कूल में रुचि लेने लगी, लेकिन उसके घर का माहौल उसे पढ़ाई में पूरी तरह ध्यान केंद्रित करने नहीं दे रहा था। मंदाकिनी जी ने उसके परिवारवालों से बातचीत की। उसके माता-पिता को बेटी की पढ़ाई का महत्व समझाया। शिक्षकों के निरंतर प्रयासों से वे सायली की पढ़ाई के लिए घर में अनुकूल वातावरण होने का महत्व समझने लगे। कुछ महीनों में सायली के डर और संकोच दूर हो गए। उसे कक्षा में बैठना और सीखना पसंद आने लगा। खेल, चित्रकला और पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन कर के वो अब शिक्षा के प्रवाह में शामिल हो गई थी।

मंदाकिनी जी ने एक महत्वपूर्ण बदलाव का उदाहरण पेश किया है। टीम विनोबा एक और प्रेरणादायी कहानी और आशा लेकर अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ी है।

एक रुपए की सज़ा

वडशिंगी (बुलढाणा) : 'एक रुपये की सजा' – सुनकर ही उत्सुकता होती है न? बुलढाणा जिले में जलगांव-जामोद तहसील के वडशिंगी जिला परिषद मराठी शाला के अनुभवी शिक्षक श्री सारंगधर बांगर का यह रोचक उपक्रम छात्रों को भविष्य के लिए तैयार कर रहा है।

उन्होंने विद्यार्थियों की 'बचत बैंक' शुरू करवाई है। जो विद्यार्थी स्कूल में अनुपस्थित रहेगा वह अगले दिन इसमें एक रुपया जमा करेगा। यह पहल अनुशासन विकसित करने के साथ बच्चों को छोटी उम्र में ही बचत का महत्व भी सिखा रही है।

नए और प्रभावी अध्यापन सामग्री के निर्माण के साथ साथ सारंगधर जी अपने छात्रों के व्यावसायिक विकास पर भी ध्यान देते हैं। अपने 27 साल के करियर में, उन्होंने जिन 67 विद्यार्थियों को तैयार किया, जो आज सरकारी पदों पर कार्यरत हैं।

प्राकृतिक आपदाओं, भोजन का महत्व, और उससे होने वाले लाभ-हानि जैसे विषयों पर सारंगधर जी ने विशेष टीचिंग लर्निंग मटेरियल तैयार किए हैं। इससे छात्र स्कूल के दायरे से बाहर निकलकर वास्तविक जीवन की समस्याओं से निपटने में सक्षम हुए हैं।

ऐसे बहुआयामी शिक्षा देनेवाले इस मेधावी शिक्षक के आगे विनोबा टीम का हर स्वयंसेवक नतमस्तक है।

छात्रों ने लिया प्रशासनिक कार्य का जायजा

बाल दिवस विशेष

धमतरी : बाल दिवस के उपलक्ष्य में जिला कलेक्टर श्रीमती नम्रता गांधी द्वारा परिकल्पित 'शैडो ऑफिसर' कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम बाल दिवस को विशेष और नवाचारी तरीके से मनाने का उनका प्रयास था। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को शिक्षा व्यवस्था, स्कूलों में मिलनेवाली सुविधाओं, और प्रशासन के विभिन्न आयामों के बारे में जानने और समझने का अवसर देना था, ताकि वे जिज्ञासु बन सकें।

धमतरी जिले के कक्षा 9वीं से 12वीं के 200 छात्रों को विनोबा ऐप पर निबंध प्रतियोगिता के माध्यम से चयनित कर शैडो ऑफिसर की भूमिका सौंपी गई। ये छात्र उन 800 प्रविष्टियों में से चुने गए थे, जो विनोबा ऐप पर निबंध के रूप में भेजी गई थीं।

19 नवंबर 2024 को सुबह 10 बजे से चयनित स्कूलों के बच्चों को पूर्व सूचना देकर जिले के 169 ब्लॉकों और विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ उनके कार्यालयों में बैठकर उनके पूरे दिन के कार्यों को समझने का मौका दिया गया। अन्य दिनों की तरह ही इन शैडो ऑफिसर बने विद्यार्थियों का भी स्वागत किया गया। विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने इन बाल अधिकारियों को सरकारी कार्यप्रणाली की जटिलताओं और प्रक्रियाओं के बारे में विस्तार से बताया। शेष 31 छात्रों को अन्य स्कूलों के प्राचार्यों के साथ जोड़ा गया।

> "हमारा उद्देश्य छात्रों को अधिकारियों के कार्यों को समझने का मौका देना और उन्हें बड़े लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित करना है। यह उनकी जिंदगी का सुनहरा दौर है। हम चाहते हैं कि वे छोटे और बड़े लक्ष्य बनाना सीखें और उन्हें व्यवस्थित रूप से पूरा करने की दिशा में प्रयास करें। इस समय जो वे सीखते हैं, वह उनके पूरे जीवन में साथ रहेगा।"
>
> **- धमतरी कलेक्टर श्रीमती नम्रता गांधी**

जिला कलेक्टर के साथ कक्षा 12वीं के छात्र प्रवीण कुमार साहू पूरे दिन रहे, जिनका हर जगह अधिकारियों की ही तरह स्वागत किया गया। उन्होंने सुबह से शाम तक कलेक्टर मैडम के साथ सभी गतिविधियों को करीब से देखा और बेहतर ढंग से समझा। शिक्षकों ने इस पहल की प्रशंसा करते हुए कहा कि गांव के बच्चों को अक्सर यह नहीं पता होता कि अधिकारी क्या करते हैं। ऐसे कार्यक्रमों से न केवल बच्चों, बल्कि जनता को भी यह समझने में मदद मिलेगी कि अधिकारी और प्रशासन किस प्रकार कार्य करते हैं और दिनभर में किस तरह की समस्याओं का सामना करते हैं।

श्रीमती गांधी ने कहा, "इस तरह हमें अपने काम को बच्चों और जनता के नजरिए से देखने का मौका मिला, जिससे हम खुद को बेहतर बना सकें। ऐसे कार्यक्रमों से हमें जमीनी स्तर पर काफी कुछ सीखने को मिलता है।"

कार्यक्रम का समापन कलेक्टर परिसर में नम्रता जी द्वारा किया गया।

धमतरी जिले के इस महीने के 'पोस्ट ऑफ मन्थ' पुरस्कार के लिए चयनित शिक्षकों को इन्ही शैडो अफसरों के हाथों सम्मानित किया गया।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन के धमतरी जिला प्रतिनिधि हितेश निर्मलकर ने इस अवसर पर शैडो अफसरों को विनोबा ऐप के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

तहसीलदार कार्यालय के कर्मचारी और अधिकारीयों ने शैडो अफसर (तहसीलदार), कक्षा 10 की छात्रा कु. डिकेश्वरी, का उसी तरह स्वागत किया जैसे किसी तहसीलदार का होता है।

महाराष्ट्र के छात्रों को मिलेंगे विशेष पहचान पत्र

मुंबई: अन्य राज्यों की तरह महाराष्ट्र प्राथमिक शिक्षा परिषद ने सभी स्कूलों को अगले महीने तक छात्रों के लिए 'अपार' पहचान पत्र जारी करने का निर्देश दिया है। यह अनोखी पहचान संख्या (Automated Permanent Academic Account Registry – APAAR) राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का हिस्सा है।

इसका उद्देश्य 'एक राष्ट्र, एक छात्र पहचान पत्र' बनाना है, जो पूर्व-प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक हर छात्र के लिए स्थायी रूप से मान्य होगा। यह आईडी छात्रों के 12-अंकों के आधार नंबर के अतिरिक्त होगी। राज्य सरकार ने पिछले वर्ष अक्टूबर में पूर्व-प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं तक के छात्रों के लिए अपार आईडी लागू करने का निर्णय लिया था। इसे 'एजुकेशन इकोसिस्टम रजिस्ट्री' या 'एड्यूलॉकर' भी कहा जाता है।

यह एक स्थायी पहचान संख्या होगी, जो छात्रों की शैक्षणिक प्रगति और उपलब्धियों को रिकॉर्ड करेगी। स्कूल प्रशासकों ने छात्रों के आधार विवरण को पोर्टल पर अपडेट करने में चुनौतियों की शिकायत की है। ■

कूट प्रश्न 5

How many words can you Make from these letters, Each time using the letter 'S'?

N P D
M S E
U Y O

कूट प्रश्न 4 का उत्तर: 35

बढ़ती फ्रॉड शैक्षणिक योजनाएँ: अभिभावकों को चेतावनी

मुंबई : महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक उत्पादन एवं पाठ्यक्रम अनुसंधान ब्यूरो (बालभारती) ने राज्यभर में चल रही एक धोखाधड़ी योजना को लेकर अभिभावकों को सतर्क किया है। यह योजना फोन कॉल के जरिए अभिभावकों को ठगने के उद्देश्य से चलाई जा रही है, जिसमें शैक्षणिक सेवाओं का झूठा वादा किया जा रहा है। इस मामले की शिकायत पुणे के साइबर पुलिस विभाग में की गई है।

इन ठगों ने सुनियोजित तरीके अपनाए हैं, जैसे छात्रों के स्कूल रिकॉर्ड तक पहुंच होने का दावा करना और खुद को बालभारती का अधिकृत कर्मचारी बताना। वे घर पर शैक्षणिक मूल्यांकन और मार्गदर्शन सत्र की पेशकश कर रहे हैं, जिससे छात्रों की सुरक्षा और डेटा गोपनीयता को लेकर गंभीर चिंताएं उत्पन्न हुई हैं। बालभारती, जो कक्षा 1 से 10 तक के लिए पाठ्यपुस्तकें तैयार करती है, ने माता-पिता को किसी भी भुगतान से बचने की सलाह दी है। बालभारती के अधिकारियों ने स्पष्ट किया है कि वे न तो घर जाकर किसी प्रकार का मूल्यांकन करते हैं और न ही किसी निजी संगठन को ऐसा करने की अनुमति देते हैं। संदिग्ध कॉल आने पर माता-पिता को अपने नजदीकी पुलिस स्टेशन या साइबर क्राइम विभाग से संपर्क करने के निर्देश दिए गए हैं। यह घटनाक्रम जुलाई 2023 की एक बड़ी सुरक्षा चूक के बाद सामने आया है, जब बालभारती की आधिकारिक वेबसाइट पर अनधिकृत पहुंच प्राप्त की गई थी। पुलिस इन धोखाधड़ी वाले कॉलों के स्रोत का पता लगाने के लिए जांच कर रही है। ■

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**